तौहीद वाला शहज़ादा

(बच्चों के लिए ईमान बढ़ाने वाली एक कहानी)

माइल ख़ैराबादी

अनुवाद

कौसर लईक़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
(अल्लाह के नाम से जो मेहरबान और रहम करने वाला है)

तौहीद वाला शहज़ादा

बहुत दिनों की बात है, एक बादशाह था। उसने बहुत-से ादशाहों को अपना आज्ञाकारी बना लिया था। वह बड़ा मग़रूर ौर घमण्डी था। अपने बराबर किसी को समझता ही न था। वह मझता था कि कोई उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। फिर तो उसने बसे कहा कि मुझे ख़ुदा मानो। जो मुझको ख़ुदा न मानेगा उसको ल्ल करवा दूँगा। मैं जो भी आदेश दूँ, वह चाहे तुम्हारी समझ में ाये या न आये उसे दिल से मानो।

जो लोग डरपोक थे, उन्होंने उसे अपना ख़ुदा मान लिया। लेकिन सी बादशाह के लड़के ने उसे ख़ुदा मानने से इंकार कर दिया। उसने हा—

"ख़ुदा तो वह है, जिसने मुझको, आपको और सबको पैदा किया , जिसके वश में ज़मीन और आसमान है और जो कुछ उनमें है वह ा उसी के वश में है। जो न खाता है, न पीता है, न सोता है, न थकता और न जिसे नींद सताती है। मौत और ज़िन्दगी उसी के हाथ में है ौर वह है अल्लाह। अल्लाह के सिवा किसी और के वश में कुछ भी हीं, तो फिर अल्लाह के सिवा कोई और कैसे ख़ुदा हो सकता है?"

लड़के ने जब यह कहा, तो बाप यानी वह बादशाह बहुत नाराज़ आ। पहले तो उसने समझाया, लेकिन लड़के की समझ में नहीं आया ह एक इंसान ख़ुदा कैसे हो सकता है और भाई! सच्ची बात यह है कि ह बात समझ में आने वाली है ही नहीं। अतः जब वह लड़का न माना

तो बादशाह ने डराया धमकाया और इसके बाद भी लड़का जब न माना तो उसे जेल में डाल दिया। जब वह जेल में भी न माना तो फिर बादशाह ने उसे और अधिक दुख देना शुरू कर दिया।

बादशाह ने आदेश दिया कि उसे मारो-पीटो। अब लड़का बुरी तरह पीटा जाने लगा। परन्तु उसने फिर भी बादशाह को ख़ुदा न माना। अब बादशाह ने आदेश दिया कि उसे जंगल में छोड़ आओ। सिपाही उसे जंगल में छोड़ आये। जंगल में लड़के को पहले तो बड़ा डर लगा, फिर उसने ख़ुदा को याद किया। उसने दुआ की——

"ऐ अल्लाह! तू ही हर मुसीबत से बचाने वाला है, बादशाह मेरी जान और मेरे ईमान के पीछे पड़ा है। मेरी जान और ईमान बचाने वाला तू ही है।"

दुआ मांगने के बाद लड़के को बड़ी तसल्ली हुई। अब उसने जंगल में चारों ओर देखा, तो तरह-तरह के जानवर, छोटी-बड़ी चिड़ियां, ज़हरीले कीड़े-मकोड़े दिखाई दिये। शेरों की गरज और सांपों की फुंकार भी सुनी। वह ख़ुदा पर भरोसा करके उनसे बचने के उपाय सोचने लगा। कुछ सोचकर वह एक पेड़ पर चढ़ गया। भूख लगी थी। उसने उस पेड़ के फल खाये और फिर उसी पर बैठ गया और जंगल के जानवरों का खेल-तमाशा देखने लगा।

उसने देखा कि एक ओर से एक शेर लंगड़ाता हुआ आ रहा है। वह शेर उसी पेड़ के नीचे आकर रुक गया। शेर ने लड़के की गंध पाई, तो ऊपर नज़र उठाकर देखा। गरजा फिर अपना एक पैर ऊपर उठाया। लड़के ने देखा कि एक बड़ा-सा कांटा शेर के तलवे के आर-पार हो गया है। अब लड़का सोचने लगा कि क्या करे? उसके दिल में आया कि शेर के पांव से कांटा निकाल देना चाहिए। वह धीरे-धीरे उतरा और उसने शेर के पैर से कांटा निकाल दिया। लड़के

ने फिर पेड़ पर चढना चाहा, लेकिन शेर ने लपककर उस लड़के को मुंह से पकड़ लिया और अपनी पीठ पर बैठा लिया। इसके बाद लड़के को जंगल के बाहर ले जाकर छोड़ दिया और उसके सामने खड़ा होकर एहसानमन्दी से कुत्ते की तरह दुम हिलाने लगा। लड़का बहुत खुश हुआ और अपने शहर की ओर चल पड़ा। शेर देर तक खड़ा देखता रहा, फिर जंगल में चला गया।

शहज़ादा अपने शहर की ओर चला। अब उसे अच्छी तरह यक़ीन हो गया कि अल्लाह ही मुसीबत से बचाने वाला है। शहज़ादा अपने शहर पहुँचा तो लोगों से साफ़-साफ़ कहने लगा कि मेरा बाप अपने को ख़ुदा कहलवाता है। वह ख़ुदा नहीं है। ख़ुदा तो वह है, जिसने सारी ज़मीन और आसमान को पैदा किया और जो किसी का मुहताज नहीं, जो न खाता है, न पीता है और न सोता है। मेरा बाप तो इन सब बातों का मुहताज है और यह कि मेरे बाप के वश में मौत और ज़िंदगी नहीं। देखो! मेरे बाप ने मुझे जंगल में अकेला छोड़ दिया था, लेकिन मेरे ख़ुदा ने मुझे बचा लिया।

शहर के लोगों ने शहज़ादे की बात कान लगा कर सुनी। यह ख़बर बादशाह को हुई। उसने तुरन्त आदेश दिया कि शहज़ादे को पकड़ लाओ। सिपाही शहज़ादे को पकड़ लाए, तो फिर बादशाह ने दूसरा आदेश यह दिया कि शहज़ादे को भूखे शेर के आगे डाल दिया जाए।

बादशाह का आदेश सुनते ही सिपाही शिकारियों के साथ जंगल की ओर गये। जाल लगा कर एक शेर को पकड़ा। लोहे के पिंजड़े में बंद किया और ले आये।

जब शेर आ गया तो उसे एक दिन भूखा रखा गया। दूसरे दिन शहर के लोगों को इकट्ठा करके सबके सामने मैदान में लोहे की छड़ों

का एक घर बनाया गया और शहज़ादे को उसमें ढकेल दिया गया इसके बाद शेर को भी उसी घर में छोड़ दिया गया। पहले तो शेर भूख के मारे शहज़ादे की ओर झपटा, लेकिन जब निकट पहुंचा त शहज़ादे के आगे ठहर गया। शहज़ादे को देखा, सूंघा, फिर पालत कुत्ते की तरह पूंछ हिलाने लगा। शहज़ादे ने भी शेर को देखा औ पहचान लिया कि यह वही शेर है, जिसके पांव से उसने कांटा निकाल था। पहचान कर शहज़ादा शेर के सिर पर हाथ फेरने लगा। देखने वाले दंग रह गये कि शेर ने शहज़ादे को क्यों नहीं खाया?

शहज़ादे ने दिल-ही-दिल में अल्लाह का शुक्र अदा किया। इसके बाद अपने बाप, यानी बादशाह की ओर देखा और ज़ोर से पुकारा-

"अब्बाजान! देखिये, आपके आदेश से मुझे शेर के सामने डाल गया, लेकिन ख़ुदा के आदेश से शेर ने मुझको कुछ भी नुक़सान नहीं पहुंचाया। इससे मालूम हुआ कि मौत और ज़िंदगी, फ़ायदा और नुक़सान सब अल्लाह के हाथ में है। यदि आप ख़ुदा होते तो आपके आदेश कैसे टलता। अब्बाजान! आप ख़ुदा से डरिए, मुझे डर है कि कहीं अल्लाह का क्रोध आप पर टूट न पड़े।"

शहज़ादे ने इस प्रकार पुकार कर बाप से कहा, तो दूसरे लोगों ने भी सुना। लोगों ने आपस में कहा—"शहज़ादा बिल्कुल सही कहता है।" लेकिन शहज़ादे की सच्ची बात सुन कर बादशाह और भी क्रोधित हुआ। उसने लोगों को आदेश दिया कि सब लोग अपने-अपने घरों को जाएं और सिपाहियों को आदेश दिया कि इस ज़िद्दी लड़के को ले जाकर नदी में बहा दो। नदी में इसे मछलियां खा जाएंगी, या घड़ियाल निगल जाएगा, या फिर डूब कर मर जाएगा।

सिपाहियों ने शेर को फिर पिंजड़े में बंद कर दिया और शहज़ादे को शेर से अलग करके नदी की ओर ले चले। सिपाही शहज़ादे को

लिए नदी के किनारे पहुंचे, शाम का वक़्त था। अभी सिपाहियों ने शहज़ादे को नदी में डाला भी नहीं था कि पश्चिम की ओर से बड़ी ज़ोर की आंधी उठी और देखते ही देखते आंधी उनके सिरों से गुज़री। कुछ घण्टों तक तेज़ हवा चलती रही और हवा के साथ धूलें भी उड़ती रहीं। जब आंधी ख़त्म हुई तो सिपाहियों ने शहज़ादे को नदी में फेंक दिया और शहर को वापस आ गये।

शहज़ादे को तैरना आता था। उसने हाथ-पांव मारे, लेकिन नदी की लहरें बड़े ही ज़ोर की थीं। शहज़ादा लहरों में नहीं तैर सका और बेबस होकर बह चला। उसने दिल-ही-दिल में ख़ुदा को पुकारा, "ऐ अल्लाह! मौत और ज़िंदगी का मालिक तू ही है, मैं तुझ से ही दुआ करता हूँ; मुझे इस बड़ी नदी से बचा ले।"

शहज़ादा इस प्रकार दुआ मांगता हुआ बहता जा रहा था। नदी की लहरें कभी उसे गोता देतीं, तो कभी पानी के ऊपर उछाल देतीं, इससे शहज़ादे को बड़ी तकलीफ़ होती। वह बहुत-सा पानी भी पी गया था। क़रीब था कि वह बेहोश हो जाए। लेकिन अचानक उसको ऐसा लगा, जैसे वह किसी चीज़ में फंस गया हो। उसने आंखें खोलकर देखा कि नदी के किनारे का एक बड़ा-सा पेड़ पानी में गिरा पड़ा है। नदी का पानी उसकी टहनियों और पत्तियों के बीच से होकर जा रहा है और वह उसी पेड़ की टहनियों में उलझ कर रह गया है। अब शहज़ादे ने बचने के लिए फिर हिम्मत की। उसने एक बड़ी टहनी को पकड़ लिया फिर उसके सहारे पेड़ की जड़ की ओर चला। मोटी-मोटी टहनियों के सहारे वह जड़ के पास पहुंच गया। रात हो चुकी थी। रात में वह उसी पेड़ के तने पर बैठा रहा और अल्लाह का शुक्र अदा करता रहा। सुबह हुई तो फिर शहर की ओर चला। शहर के लोगों ने उसे पहचान लिया। पूछा, "तुम कैसे बचे?" शहज़ादे ने कहा—

"मेरे ख़ुदा ने मुझे बचा लिया। यदि मेरा बाप ख़ुदा होता तो अब तक वह मुझे मार चुका होता। तुम लोगों को चाहिए कि बादशाह को ख़ुदा मानने से इंकार कर दो।"

शहज़ादा तो इस तरह लोगों को समझा रहा था और उधर सिपाहियों ने बादशाह को ख़बर दी कि शहज़ादा फिर ज़िन्दा और सलामत शहर में घूमता-फिर रहा है और आपके ख़िलाफ़ लोगों को भड़का रहा है।

यह सुनकर बादशाह ने आदेश दिया, "पकड़ लाओ। इस बार मैं उसे इस उपाय से मारूँगा कि वह ज़िन्दा नहीं बच सकता।"

आदेश पाकर सिपाही शहज़ादे को पकड़ने चले। उन्होंने शहज़ादे को पकड़ा और बांधकर बादशाह के पास ले आये। बादशाह ने आदेश दिया कि शहज़ादे को आग में झोंक दिया जाए। सारे दरबारी यह आदेश सुनकर डर के मारे कांपने लगे, लेकिन महामंत्री कुछ सोचकर हंस पड़ा। भरे दरबार में उसका हंसना, बादशाह को बहुत बुरा लगा। उसने महामंत्री को टोका, "यह क्या बदतमीज़ी है? मेरे सामने यह गुस्ताख़ी? बता तू क्यों हंसा?"

महामंत्री ने कहा—

"ऐ बादशाह! मैं यह सोचकर हंसा कि आख़िर तू कैसा ख़ुदा है। तेरा हुक्म बार-बार टल जाता है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि मौत और ज़िन्दगी तेरे हाथ में नहीं है। तूने दो बार शहज़ादे की जान लेने का इरादा किया, लेकिन शहज़ादा दोनों बार बच गया।"

"ऐ बादशाह! मैं तो यह सोच रहा हूँ कि ख़ुदा तो सचमुच वह है, जिसने यह दुनिया पैदा की और जिसके हुक्म पर दुनिया की हर चीज़ चल रही है। वही ख़ुदा शहज़ादे की जान बचा रहा है। फिर मैं यह

सोचकर हंसा कि शायद तू इस बार भी शहज़ादे की जान न ले सकेगा।"

महामंत्री की यह बात जब दरबार के लोगों ने सुनी तो कुछ लोग मुस्कुराए। लेकिन बादशाह के डर से उन्होंने अपने मुंह पर हाथ रख लिया और देखने लगे कि अब बादशाह महामंत्री के लिए क्या आदेश देता है। इधर बादशाह महामंत्री की बात सुनकर गुस्से के मारे क़ाबू से बाहर हो गया। उसने हुक्म दिया—

"अच्छा तो ले, तुझे भी शहज़ादे के साथ आग में झोंका जाएगा। देखता हूँ, तुम दोनों को कौन बचा सकता है? सिपाहियो! जकड़ लो इसे भी ज़ंजीरों में।"

सिपाही महामंत्री को पकड़ने के लिए आगे बढ़े। अचानक एक गरजदार आवाज़ दरबार में गूंजी—"ख़बरदार, अगर किसी ने महामंत्री को हाथ लगाया तो...।"

सारे दरबारी देखने लगे कि यह डांट बताने वाला कौन है? देखा तो फ़ौज का एक अधिकारी, 'तेग़ बहादुर' तलवार ताने खड़ा है और उसकी आंखें गुस्से से लाल हो रही हैं। वह फ़ौज के तीन हज़ार सिपाहियों का अधिकारी और महामंत्री का दामाद था। महामंत्री की बातें सुनकर उसका भी ईमान जागा। उसने भरे दरबार में घोषणा कर दी—

"ख़ुदा तो वह है, जिसने यह दुनिया बनाई और जिसके हुक्म को कोई टाल नहीं सकता। और ऐ बादशाह! तू हमारी ही तरह एक इंसान है। राजगद्दी पाकर घमण्ड न कर, ख़ुदा बनकर न बैठ, तेरा बेटा सच्चा है, जिसने 'अल्लाह' को अपना मालिक माना है।"

तेग़ बहादुर की इन बातों से दरबार में सन्नाटा छा गया। दरबारी

यह सोच रहे थे कि देखें इसके बारे में बादशाह क्या हुक्म देता है। पर बादशाह तो बड़ा घमण्डी था, उसने फ़ौज के सरदार की ओर देखा और हुक्म दिया कि इस नमक हराम को भी ज़ंजीरों में जकड़ लो और उन दोनों बाग़ियों के साथ इसे भी जला दो।

सिपहसालार ने तत्काल फ़ौज के दो सौ सिपाहियों को बुला लिया। तेग़ बहादुर अकेला ही भरे दरबार में लड़कर जान देने पर तुल गया। लेकिन महामंत्री ने उसे समझाया कि बेटे! तुम अकेले फ़ौज का सामना नहीं कर सकते। यदि अल्लाह को मंज़ूर है कि हम ज़िन्दा रहें, तो यह बादशाह हमें नहीं मार सकता और मुझे तो पक्का यक़ीन है कि अल्लाह हमें ज़रूर बचायेगा। तुम इस वक़्त सब्र करो और अल्लाह से दुआ करो। वह अपने फ़रिश्तों के द्वारा हमारी मदद करेगा।

महामंत्री की नसीहत भरी बातें सुनी तो तेग़ बहादुर ने सिर झुका लिया और तलवार म्यान में रख ली। इसके बाद महामंत्री के साथ उसे भी पकड़ कर ज़ंजीरों में जकड़ दिया गया।

यह ख़बर पूरे शहर में फैल गई। यह ख़बर महामंत्री की बेटी संजीदा ख़ातून ने भी सुनी। पहले तो वह घबरा गई, फिर कुछ सोचकर कहने लगी—

"सच्ची बात तो यही है कि ख़ुदा तो वही है, जिसका आदेश नहीं टलता और जिसके वश में मौत भी है और ज़िन्दगी भी।"

यह सोचकर संजीदा ख़ातून की घबराहट दूर हो गई। वह सोचने लगी कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिए कि शहज़ादा फिर बच जाए और उसके साथ मेरा बाप और शौहर भी ज़िन्दा रहे। यदि अल्लाह इस बार उन सबको मौत से बचा ले तो फिर यक़ीन है कि बहुत-से

लोग बादशाह को ख़ुदा मानने से इंकार कर देंगे और बादशाह को फिर मुंह की खानी पड़ेगी। मंत्री की बेटी उन सबको बचाने के उपाय भी सोचती जाती थी और अल्लाह से दुआ भी करती जाती थी।

उधर उस घमण्डी बादशाह ने तीनों को एक कोठरी में बंद करवा कर कड़ा पहरा लगा दिया और हुक्म दिया कि कोई चिड़िया भी उड़कर शहज़ादा, महामंत्री और तेग़ बहादुर तक न जाने पाए। उन तीनों के क़ैद होने की ख़बर शहर भर में फैल गई। महामंत्री और तेग़बहादुर को शहर के लोग बहुत मानते थे। वे सब बहुत बिगड़े और चाहा कि मिलजुल कर क़ैदख़ाने पर धावा बोल दें और मंत्री एवं तेग़ बहादुर को छुड़ा लें। तेग़ बहादुर तीन हज़ार फ़ौजी सिपाहियों का सरदार था, उन सिपाहियों को अपने सरदार के क़ैद हो जाने का बड़ा दुख था। उन्होंने भी चाहा कि बग़ावत कर दें और बादशाह के ख़िलाफ़ हो जाएं। यह ख़बर महामंत्री की बेटी संजीदा ख़ातून को मिली। उसने शहर के समझदार लोगों को अपने घर बुलाया। तेग़ बहादुर के मातहत पदाधिकारियों को भी बुलाया और कहा—

"यदि आप लोग यह चाहें कि बादशाह से लड़कर मेरे बाप और मेरे शौहर को छुड़ा लें तो यह आप नहीं कर सकते। बादशाह के पास फ़ौज बहुत है। उसका सामना आप लोग नहीं कर सकते। यदि ऐसा किया तो मुफ़्त में अपनी जानें देंगे। मैंने शहज़ादा, महामंत्री और तेग़ बहादुर की जान बचाने की एक तरकीब सोची है। यदि आप लोग मेरा साथ दें, तो उम्मीद है कि तीनों की जानें बच सकती हैं।"

लोगों ने पूछा, "वह क्या तरकीब है?"

संजीदा ख़ातून ने बताया कि मैं अभी वह तरकीब किसी को नहीं बताऊंगी। आप मुझ पर भरोसा करें। मुझे पूरा यक़ीन है कि मैं तीनों को आग में जलने से बचा लूँगी। लोगों ने कहा—"ऐ मंत्री की बेटी!

यदि इस बार भी शहज़ादा बच जाए और महामंत्री एवं तेग़ बहादुर भी ज़िन्दा और सलामत हमारे पास आ जाएं, तो सारा शहर और बहुत से फ़ौजी अधिकारी भी बादशाह को ख़ुदा मानने से इंकार कर देंगे तथा शहज़ादे के साथ हो जाएंगे। अब आप हमें यह बताएं कि हम आपका साथ किस तरह दें?"

संजीदा ख़ातून ने कहा, "आप लोग एक काम तो यह करें कि लकड़हारों के मुखिया और क़ब्रिस्तान के चौधरी को मेरे पास भेज दें और दूसरा काम यह करें कि शहर में जाकर हर एक से कहना शुरू कर दें कि ख़ुदा का हुक्म तो टलता नहीं, लेकिन बादशाह का हुक्म दो बार टल गया। उसने दो बार शहज़ादे की जान लेनी चाही, लेकिन वह हर बार बच गया। अब मालूम होता है कि इस बार भी शहज़ादा बच जाएगा, पर यह काम आप चुपके-चुपके करें। ऐसा न हो कि आप शोर-हंगामा कर दें और बादशाह आप से सावधान हो जाए।"

लोगों ने संजीदा ख़ातून की बातें बड़े ध्यान से सुनी। सब जानते थे कि संजीदा ख़ातून महामंत्री की तरह समझदार है और अपने शौहर तेग़ बहादुर की तरह बहादुर भी। किसी-न-किसी तरकीब से सबको छुड़ा लेगी। सबने वादा किया कि मुखिया और चौधरी को आपके पास भेजेंगे और यहां से जाते ही हर एक से बार-बार वही कहना शुरू कर देंगे, जो आपने बताया है। वैसे बहुत-से लोग कहते हैं कि यह न जाने कैसा ख़ुदा है? उसने दो बार शहज़ादे की जान लेनी चाही और न ले सका। भला कभी ऐसा भी हुआ है कि ख़ुदा का चाहा हुआ न हो सके!

लोग मंत्री की बेटी के घर से चले गये। कुछ लोग लकड़हारों के मुखिया और चौधरी के पास गये। उनसे कहा कि तुम को महामंत्री की बेटी ने बुलाया है। दोनों संजीदा ख़ातून के पास पहुंचे। संजीदा ख़ातून ने दोनों से अलग-अलग मुलाक़ात की और बड़ी देर तक उनसे बातें

कीं। फिर हज़ार-हज़ार अशरफ़ियों की थैली उनको दी। दोनों ने संजीदा ख़ातून से वादा किया कि जैसा आपने कहा है, वैसा ही करेंगे।

लकड़हारों का मुखिया और क़ब्रिस्तान का चौधरी दोनों महामंत्री की बेटी संजीदा ख़ातून से मिलकर अपने-अपने घर गये। शाम को मुखिया ने लकड़हारों को बुलाया। बादशाह का हुक्म सुनाया कि दो दिन के अन्दर मैदान में लकड़ियों के ढेर लगा दिये जाएं। लकड़हारों ने जवाब दिया, "जैसा हुक्म हो और आप जिस तरह बताएं उसी तरह ढेर लगा दिये जाएं।"

मुखिया ने सभी लकड़हारों को पांच-पांच रुपया इनाम दिया और कहा कि मज़दूरी भी अच्छी ख़ासी मिलेगी। दूसरे दिन सैकड़ों लकड़हारे जंगल से लकड़ियां लाने लगे। मुखिया ने निशान बनाकर एक कोठरी के बराबर जगह बता दी और कहा कि इतनी जगह छोड़कर इसके आसपास लकड़ियों का ढेर लगाना शुरू कर दो। लकड़हारों ने ऐसा ही किया। दो दिनों के अन्दर लकड़हारों ने जंगल का जंगल काट डाला और मैदान में लकड़ियों का एक पहाड़ खड़ा कर दिया।

शहर के लोग यह सब देखने जाते तो आपस में कहते कि इस बार शहज़ादा मौत के मुंह से न बच सकेगा और इसके साथ महामंत्री और फ़ौज का सरदार तेग़ बहादुर भी जला दिया जाएगा। यह सुनकर कुछ लोग कहते कि भाई! कुछ नहीं कहा जा सकता। शहज़ादे को दो बार कड़ी सज़ा दी गई, पहली बार शेर ने उसे नहीं खाया, दूसरी बार नदी में डाला गया तो बच गया। ऐसा मालूम होता है कि कोई शहज़ादे को बचा रहा है और वह बचाने वाला ही सचमुच ख़ुदा है। यह बादशाह अपने को न जाने क्यों ख़ुदा कहता है। हम सबने देखा है कि दो बार कोशिश करके वह शहज़ादे को न मार सका। भाई! हमारा तो यह

ख़याल है कि शहज़ादा इस बार भी बच जाएगा और भाई! सच्ची बात तो यह है कि यदि इस बार शहज़ादा बच गया तो हम भी बादशाह को ख़ुदा मानने से इंकार कर देंगे।

दो दिन तक शहर में इसी प्रकार की बातें होती रहीं। तीसरे दिन बादशाह ने शहर के लोगों को हुक्म दिया कि सब मैदान में इकट्ठे हो जाएं और शहज़ादे एवं उसके साथ महामंत्री तथा तेग़ बहादुर को जलते देखें। सारा शहर दोपहर तक उमड कर आ गया, लेकिन महामंत्री की बेटी संजीदा ख़ातून वहां न थी। वह अपने घर पर भी न थी। किसी को मालूम नहीं हो सका कि वह कहां गई। ठीक दोपहर को बादशाह ने आदेश किया कि शहज़ादे के साथ महामंत्री और तेग़ बहादुर को हाज़िर किया जाए और उन सबको लकड़ियों के इस पहाड़ पर ठीक बीच में बैठा दिया जाय।

यह आदेश सुनकर जेल के दारोग़ा ने सिपाहियों को साथ लिया और तीनों को बादशाह के सामने पेश किया। बादशाह ने कहा—

"ऐ शहज़ादे और ऐ मेरे महामंत्री और मेरी फ़ौज के सरदार तेग़ बहादुर! तुम तीनों अपनी बातों से अब भी तौबा कर लो और मुझे ख़ुदा मान लो। मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। वरना देख लो, लकड़ियों का पहाड़! तुम्हें इस पर बैठा कर आग लगा दी जाएगी। तुम तीनों इस प्रकार जल मरोगे कि तुम्हारी राख भी तलाश करने पर नहीं मिलेगी।"

तीनों ने कड़क कर जवाब दिया—

"मौत और ज़िन्दगी ख़ुदा के हाथ में है, जिसने हमें पैदा किया है। हम तो अब भी अपने उसी ख़ुदा से दुआ करते हैं। हमें जो कुछ कहना होता है, उसी से कहते हैं। यदि उसकी मर्ज़ी यही है कि हम जल-मर

जाएं, तो हम इसी में ख़ुश हैं, लेकिन हमारा दिल तो यह कहता है कि हमारा ख़ुदा हमारी मदद करेगा और वह तेरे घमण्ड को मिट्टी में मिला कर रहेगा।"

बादशाह उनका जवाब सुनकर ग़ुस्से से पागल हो गया। उसने सिपाहियों को आदेश दिया कि इन्हें जल्द-से-जल्द लकड़ियों के ढेर पर बैठा दिया जाए। सिपाहियों ने तीनों को ले जाकर लकड़ियों के ढेर के ऊपर ठीक बीच में बैठा दिया। सिपाहियों के वापस आते ही लकड़ियों के ढेर में चारों ओर से आग लगा दी गई। चारों ओर से लकड़ियां जलने लगीं। शहर के तमाम लोग यह देख कर सहम गये और कहने लगे कि अब ये तीनों कैसे बच सकते हैं?

अब उनकी सुनिये। ये तीनों लकड़ियों पर बैठे अल्लाह से दुआ कर रहे थे, वे कह रहे थे—

"ऐ हमारे सच्चे मालिक! हमारी ग़लतियों को माफ़ कर दे और हम से राज़ी हो जा। हमें यह हिम्मत दे कि हम मरते समय भी मुसलमान ही रहें। हम इस समय भी जब कोई हमारा सहारा नहीं, तुझी से मदद मांगते हैं और हम तेरी मर्ज़ी और फ़ैसले पर राज़ी हैं।"

दुआ मांग कर उनको बड़ा इत्मीनान हुआ। लकड़ियां धड़ाधड़ जल रही थीं। उनके पास की लकड़ियों तक आग पहुंची थी कि अचानक शहज़ादे ने देखा कि लकड़ियों के बीच कोठरी के बराबर जगह है, उसने महामंत्री और तेग़ बहादुर से उस जगह के बारे में बताया। अब तीनों उस जगह को देखने लगे। आग बिल्कुल उनके पास आ पहुंची थी। आग की लपटें आसमान से बातें कर रहीं थीं। हवा बड़ी तेज़ हो गई थी। अचानक क्या देखते हैं कि अन्दर से वह जगह फट गई है। उसमें से कई आदमी कुदाल और फावड़े लिए निकले। उनके साथ महामंत्री की लड़की संजीदा ख़ातून भी थी।

संजीदा ख़ातून ने अब देर नहीं की। उसने पुकारा—

"ऐ अल्लाह के बन्दो! घबराना नहीं, अल्लाह ने तुम्हारी सुन ली। तुम जल्द वहां से कूद पड़ो और हमारे पीछे-पीछे यहां से निकल भागो।"

यह कह कर संजीदा ख़ातून और उसके साथ के आदमी फिर ज़मीन के अन्दर चले गये।

संज़ीदा ख़ातून की आवाज़ सुनकर तीनों कूद पड़े। देखा तो अन्दर सुरंग है। तीनों सुरंग में घुस गये और आगे की ओर भागे। थोड़ी ही देर में वे सुरंग से बाहर निकल आये। बाहर पहुंचे तो वहां क़ब्रिस्तान का चौधरी और बहुत-से लोग कुदाल और फावड़े लिए खड़े थे। उन्होंने बढ़ कर सलाम किया और कहा, "आप लोग यहां से दूर भाग जाइये और जंगल में छिप जाइये। हम सब कल आपके पास आयेंगे और फिर जो ख़ुदा को मंज़ूर होगा, वही होगा।"

तीनों समझ गए कि संजीदा ख़ातून और चौधरी की कोशिश से यह सुरंग बनाई गई है और इस प्रकार अल्लाह ने हम सबको बचा लिया।

संजीदा ख़ातून अपने साथ खाना भी ले गई थी। उसने उनको खाना दिया और जंगल की ओर सबको विदा कर दिया और सुरंग को मिट्टी से भरवा दिया। इसके बाद संजीदा ख़ातून चौधरी और दूसरे लोगों को साथ में लेकर अपने घर आ गई और उन सबको बहुत इनाम दिया।

बादशाह को बड़ा इत्मीनान था कि उसने शहज़ादे को आग में जला दिया और शहज़ादे के साथ महामंत्री एवं फ़ौज का सरदार तेग बहादुर भी जल मरा। लेकिन दूसरे ही दिन जगह-जगह लोग बातें

कर रहे थे कि शहज़ादा, महामंत्री और तेग़ बहादुर तीनों बच गये। वे तीनों जंगल में हैं और बड़े आराम से हैं। कहीं-कहीं ये बातें भी हो रही थीं कि कुछ लोग जंगल में तीनों को देख भी आए हैं और उनसे बातें भी की हैं। एक जगह एक आदमी ने बताया कि फ़ौज में भी खलबली मची है। फ़ौज के आदमियों ने भी सुना है कि तीनों ज़िन्दा हैं। बहुत-से फ़ौजी यह सुनकर जंगल में चले गये हैं और वे सब शहज़ादे का साथ देने के लिए तैयार हो रहे हैं।

शहर में जगह-जगह ये बातें फैलीं तो लोगों के कान खड़े हुए। वे सोचने लगे कि सचमुच यदि इस बार भी शहज़ादा बच गया तो बड़े आश्चर्य की बात है। समझ में नहीं आता कि तीनों बच कैसे गये? इतनी बड़ी और भयानक आग से कोई कैसे बच सकता है और भई अगर वे ज़िन्दा हैं, तो फिर अब मानना चाहिए कि यह बादशाह झूठा है। यह ख़ुदा नहीं है और न इसके हाथ में मौत है। मौत और ज़िन्दगी का मालिक वही अल्लाह है।

इस तरह की बातें शहर में उड़ीं तो बहुत-से लोग जंगल की ओर चले, ताकि देखें कि ये बातें कहां तक सच हैं। जाकर देखा तो शहज़ादा, महामंत्री और तेग़ बहादुर ज़िन्दा थे और बहुत-से सिपाही उनके साथ मौजूद थे। यह देखकर लोग वापस आए और उन लोगों ने घर-घर बात पहुंचा दी। यह बात सुनकर बच्चा-बच्चा कहने लगा कि यह बादशाह झूठा है, यह ख़ुदा नहीं है। ख़ुदा तो वह है, जिसके हाथ में मौत और ज़िंदगी है और जिसने इस दुनिया को बनाया है और जो सबको रोज़ी देता है।

अब लोग सोचने लगे कि देखिए, आगे क्या होता है। यह सब बादशाह भी तो सुनेगा ही। बादशाह शहज़ादे को ज़िन्दा तो छोड़ नहीं सकता, लेकिन इस बार यदि शहज़ादे को पकड़ा तो फिर हम सब

बादशाह से ही लड़ पड़ेंगे। शहर वाले इस प्रकार सोच रहे थे।

अब बादशाह का हाल सुनिये। वह दरबार में धमकी दे रहा थ कि जो मुझे ख़ुदा न मानेगा, उसे उसी प्रकार जला दूंगा, जैसे शहज़ादा, महामंत्री और तेग़ बहादुर को जला दिया।

बादशाह यह कह ही रहा था कि एक सिपाही ने एक पत्र उसके सामने पेश किया। बादशाह ने मुंशी की ओर इशारा किया कि पत्र पढ़े। मुंशी ने पत्र पढ़ना आरम्भ किया। पत्र में लिखा था:—

"हम यह पत्र अल्लाह के नाम से आरम्भ करते हैं। यह पत्र अल्लाह के बन्दों की ओर से है और उस झूठे बादशाह के नाम है, जो अपने आप को ख़ुदा कहलवाता है। ऐ बादशाह! सुन, हम में से एक तेरा बेटा है, जिसने तुझे ख़ुदा न माना और जिसे तूने तीन बार मौत के घाट उतारना चाहा, लेकिन ख़ुदा ने उसे बचा लिया और दूसरा तेरा महामंत्री है और तीसरा तेरी फ़ौज का सरदार तेग़ बहादुर है। अल्लाह की मेहरबानी से हम तीनों ज़िन्दा हैं और हमारे आसपास तेरी फ़ौज के सिपाही और शहर के लोग भी इकट्ठा हो रहे हैं और सब हमारा साथ देने को तैयार हैं।

यह पत्र हम तेरे नाम इसलिए लिख रहे हैं कि यदि तू अब भी समझ जाए और तौबा कर ले और अल्लाह का बन्दा बनकर रहे, तो हम तेरा साथ देने के लिए तैयार हैं और यदि तू अब भी घमण्ड करेगा और अपने को ख़ुदा कहलवायेगा तो फिर तुझ पर जल्द ही ख़ुदा का अज़ाब नाज़िल होगा। तेरे दरबार में हमारा सलाम हर उस व्यक्ति को पहुंचे जिसने तौहीद का रास्ता अपना लिया और जो ख़ुदा को अपना मालिक और बादशाह मानता है।"

जब मुंशी पत्र पढ़ कर चुप हो गया, तो बादशाह ग़ुस्से के मारे कांपने लगा और गरजते हुए बोला—

"ग़लत है। वे उस आग से बच ही नहीं सकते। यह ख़त बनावटी और जाली है। जाओ उस आदमी को पकड़ लाओ जो यह दे गया है।"

यह आदेश सुनकर सिपाही तो उस आदमी को पकड़ने गए और इधर बादशाह ने पत्र एक मंत्री को दे दिया। उस मंत्री ने पत्र के नीचे शहजादे के हस्ताक्षर और तेग़ बहादुर के हस्ताक्षर देखे, तो वह पहचान गया और वह मुस्कुराया। उसका मुस्कुराना बादशाह को बहुत बुरा लगा। बादशाह ने उसे डांटा और कहा, "यह क्या बदतमीज़ी की बात है कि तू मुस्कुराता है। इसी तरह एक बार महामंत्री भी मुस्कुराया था, तो मैंने उसे जला दिया, मालूम होता है कि तेरी भी मौत क़रीब है।"

यह सुनकर वह मंत्री हंसने लगा। फिर हंसकर बोला, "ऐ बादशाह! मैंने उनके हस्ताक्षर पहचान लिए। पत्र में तीनों के हस्ताक्षर हैं। वे तीनों सचमुच ज़िन्दा हैं और तू झूठा बादशाह है। मौत और ज़िन्दगी तेरे हाथ में नहीं और तू कैसा ख़ुदा है कि तुझे यह भी पता नहीं कि तेरे शहर में क्या हो रहा है। मैं कल शाम ही से यही बातें सुन रहा हूँ, तेरी फ़ौज के दस हज़ार सिपाही रात को जंगल की ओर निकल गये और बहुत-से अब भी जा रहे हैं। इसलिए तू अब अपनी ख़ैर मना।"

यह कह कर मंत्री चुप हो गया। बादशाह को और भी बुरा लगा। उसने हुक्म दिया कि इस मंत्री को क़ैद कर लो और यहीं मेरे सामने क़त्ल कर दो। यह हुक्म पाते ही जल्लाद आगे बढ़ा। लेकिन जैसे ही उसने मंत्री का हाथ पकड़ा कि एक तलवार जल्लाद की गर्दन पर पड़ी और जल्लाद का सिर कट कर दूर जा गिरा। यह देखकर दरबार में सन्नाटा छा गया। लोग इधर-उधर देखने लगे। फ़ौज का एक

अफ़सर तलवार ताने खड़ा था। उसकी तलवार से जल्लाद के बदन का ख़ून बह रहा था और वह कह रहा था—"ख़बरदार! अगर किसी ने इस मंत्री की ओर बुरी निगाह से देखा। मेरी समझ में अच्छी तरह यह बात आ गयी है कि बादशाह झूठा है और शहज़ादा सच्चा है, और अब भी जंगल में ज़िन्दा है।"

यह हाल देखकर बादशाह ने तलवार निकाल ली। उसका तलवार निकालना था कि दरबार के और बहुत-से लोगों ने तलवारें खींच लीं और इस मंत्री और अफ़सर की ओर झपटे। लेकिन दरबार में कुछ ऐसे भी थे, जिनकी समझ में बात आ गई थी। ये लोग छोटे मंत्री की ओर से लड़ने को तैयार हो गये। यह देखकर बादशाह ने फ़ौज को बुलाने का आदेश दिया। लेकिन बहुत ही कम फ़ौज बादशाह की मदद को आई। सेनापति ने आकर कहा कि हुज़ूर! आधी से अधिक फ़ौज जंगल की ओर जा चुकी है और अपने साथ लड़ाई का सामान भी ले जा चुकी है। अब आप जो आदेश दें।

यह सुनकर बादशाह घबराया। सेनापति को आदेश दिया कि मंत्री और उसके सहयोगियों को घेर लें और उन्हें क़ैद कर लो या क़त्ल कर दो।

यह आदेश देकर बादशाह महल में चला गया और यहां दरबार में फ़ौज और मंत्री के सहयोगियों में तलवारें चलने लगीं।

यह ख़बर शहर वालों को मालूम हुई। शहर वालों में से बहुत-से लोग आकर मंत्री की ओर से लड़ने लगे। दो-तीन घण्टे तक तलवारें चलती रहीं। तीसरे पहर क्या देखते हैं कि जंगल की ओर से शहजादा, महामंत्री और तेग़ बहादुर घोड़ों पर सवार चले आ रहे हैं। उनके हाथों में तलवारें हैं, पीछे-पीछे फ़ौज है और शहर के हज़ारों आदमी साथ हैं और उनमें सबसे आगे महामंत्री की बेटी संजीदा

ख़ातून है। संजीदा ख़ातून ऊंची आवाज़ में कह रही है—

"लोगो! ख़ुदा तो वह है, जिसने सबको पैदा किया, जो सबको रोज़ी देता है, जिसके हाथ में मौत भी है और ज़िन्दगी भी। लोगो! तुम्हारा बादशाह झूठा है, उसने तीन बार शहज़ादे को मारना चाहा लेकिन असफल रहा और अल्लाह ने शहज़ादे को बचा लिया। देखो, हमारे साथ शहज़ादा मौजूद है।"

संजीदा ख़ातून की बातें सुनकर और शहज़ादे को ज़िन्दा देख कर शहर के लोग उधर बढ़े। उन्होंने शहज़ादे को 'सलाम' किया। शहज़ादा, महामंत्री और फ़ौज के साथ आगे बढ़ता चला आ रहा था। वह इसी प्रकार जल्दी से दरबार तक पहुंचा। देखा कि वहां जंग हो रही है। लड़ाई देखकर शहज़ादे ने पुकारा—

"मैं हूँ, अल्लाह का वह बन्दा जिसे तुम्हारे बादशाह ने तीन बार मौत की सज़ा दी। लेकिन मेरे अल्लाह ने मुझे बचा लिया। क्या अब भी तुम नहीं समझे कि तुम्हारा बादशाह झूठा है।"

शहज़ादे की यह पुकार सुनी तो दोनों ओर के लड़ने वालों ने उसकी ओर देखा। सबके सब हक्का-बक्का खड़े के खड़े रह गये। सेनापति शहज़ादे को देखकर मुस्कुराया। उसने फ़ौज को आदेश दिया कि शहज़ादे को 'सलामी' दे। पूरी फ़ौज ने सलामी दी। इसके बाद सबने मिलकर महल को घेर लिया।

इसके बाद शहज़ादा, महामंत्री, अन्य मंत्री, सिपहसालार, फ़ौज का सरदार तेग़ बहादुर और फ़ौज के कुछ बड़े-बड़े अधिकारी महल में दाख़िल हुए। महल के सिपाहियों ने रोका तो उनको पकड़ लिया गया। फिर सब बादशाह के पास पहुंचे। बादशाह उन सबको आते देखकर घबरा गया। चाहा कि भागे, लेकिन सब ने उसे घेरकर पकड़

लिया। महामंत्री ने बढ़ कर समझाया, "ऐ बादशाह! क्या तेरी समझ में अब भी नहीं आया कि ख़ुदा तो वह है, जिसने सबको पैदा किया, मौत और ज़िन्दगी उसी के हाथ में है। तू तो हम सबकी तरह एक बन्दा ही है। तुझे तो यह भी नहीं मालूम कि तेरे ख़िलाफ़ शहर में क्या हो रहा है? ख़ुदा तो वही हो सकता है, जिसको ढका-छिपा सब कुछ मालूम है।"

"ऐ बादशाह! सुन यदि तू अब भी तौबा कर ले तो हम सब तुझ को अपना बड़ा मानने को तैयार हैं और यदि तू न माना तो अब तुझे क़त्ल कर दिया जाएगा।"

महामंत्री की ये बातें जब बादशाह ने सुनीं और अपने को दूसरों के हाथों में क़ैद देखा तो उस के होश ठिकाने आ गये। उसने सिर झुका लिया। फिर कुछ देर के बाद कहने लगा—

"सचमुच यह मेरी भूल थी। अब मैं तौबा करता हूँ और मानता हूँ कि ख़ुदा तो वह है जिसने हम सबको पैदा किया है; जो हम सबको रोज़ी देता है और जिसके हाथ में मौत भी है और ज़िन्दगी भी। मैं सबके सामने इक़रार करता हूँ कि मैं भी उसका एक बन्दा हूँ और अब मैं उसी के आदेशों पर चलूँगा। ऐ लोगो! सुन लो, अब मुझे बादशाह होने की हवस नहीं है, अब मैं अपनी बाक़ी ज़िन्दगी ख़ुदा की याद में गुज़ार दूँगा।"

यह कहकर बादशाह चुप हो गया। अब शहज़ादा आगे बढ़ा, बाप से लिपट कर रोने लगा। बादशाह ने उसे गले लगा लिया और वह भी रोने लगा। इसके बाद महामंत्री आगे बढ़ा, बादशाह ने उसे भी गले लगा लिया और वह भी रोने लगा। इसके बाद फ़ौज का सरदार तेग़ बहादुर भी आगे बढ़ा। बादशाह ने उसे भी गले लगा लिया और फिर एक-एक करके सभी से मिला। सब लोगों को जमा

फ़रके बादशाह ने उसी वक़्त शहज़ादे को बादशाह बना दिया। उसने अपने सिर का ताज उतार कर शहज़ादे के सिर पर रख दिया और ख़ुद महल में जाकर अल्लाह की इबादत में लग गया।